6

बचत उत्पाद

अध्याय की विषय वस्तु	पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम
अध्ययन उद्देश्य	
परिचय	
मुख्य पद	
अ. बचत/निवेश सलाह की जरुरत	6.1
ब. किसी व्यक्ति की बचत जरुरत को निर्धारित करने वाले कारक	6.2
स. बचत उत्पादों की विशेषताएँ एवं लाभ	6.3,6.6
द. बचत उत्पादों के प्रकार	6.3
य. बचत उत्पादों के कर एवं मुद्रास्फीति प्रभाव	6.5, 6.7
र. बचत उत्पादों पर ब्याज दर का प्रभाव	6.9
ल. बचत जरुरतों की प्राथमिकता तय करना	6.4,6.8, 6.10
मुख्य बिन्दु	
प्रश्न–उतर	
स्व–परीक्षण प्रश्न	

अध्ययन उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद, आप निम्न हेतु समर्थ होंगे :–

- बचत उत्पादों पर व्यवसायिक सलाह की जरुरत जानने में,
- एक व्यक्ति की बचत जरुरत को निर्धारित करने वाले कारकों की व्याख्या करने में;
- बचत उत्पादों की मुख्य विशेषताओं एवं लाभों का वर्णन करने में;
- बाजार में उपलब्ध मुख्य बचत उत्पादों की चर्चा करने में;
- बचत उत्पादों के कर एवं मुद्रास्फीति प्रभाव का वर्णन करने में;
- बचत उत्पादों पर ब्याज दर के प्रभाव का वर्णन करने में;
- किसी व्यक्ति की बचत जरुरतों की प्राथमिकता तय करना तथा इन जरुरतों को पूरा करने के लिए बचत एवं निवेश उत्पाद प्रयोग में लाना।

परिचय

पिछले अध्याय में हमने जीवन बीमा के उन प्रकारों के बारें में पढा हैं जो ग्राहक की मृत्यु या अपंगता से उत्पन्न होने वाली सुरक्षा जरुरतों को पूरा कर सकती है। जैसा कि हमने अध्याय 1 में देखा है कि एक जीवन बीमा अभिकर्त्ता की भूमिका केवल जीवन बीमा का विक्रय करने तथा उस पर सलाह देने तक सीमित नहीं है– उससे ग्राहक को बचत उत्पादों सहित वित्तीय उत्पादों पर सलाह देने की भी अपेक्षा की जाती है।

इस अध्याय में हम अपना ध्यान बाजार में उपलब्ध बचत उत्पादो की श्रृंखला पर केन्द्रित करेंगे , उसके पश्चात हम अगले अध्याय में कुछ अन्य वित्तीय उत्पादों जैसे कि स्वास्थ्य सुरक्षा तथा दुर्घटना बीमा उत्पादो पर नजर डालेंगे।

ऐतिहासिक तौर पर शब्द "बचत" का उपयोग नियमित रूप से पूँजी संग्रह के लिए छोटी– छोटी राशियों से एक निधि के सृजन करने की प्रक्रिया का वर्णन करने में किया जाता है। शब्द "निवेश" का उपयोग मुख्यतः अच्छे प्रतिफल की आशा में कुछ उत्पादों में अधिशेष आय या एकमुश्त पूँजी के उपयोग का वर्णन करने में किया जाता है।

ध्यान रहे!
अधिकांश लोगों को जीवन में अपने वित्तीय उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक बचत/निवेश योजना की सहायता की जरुरत होती है।

एक व्यक्ति को चयन करने के लिए बाजार में कई बचत/निवेश उत्पाद उपलब्ध है : वे एक मुश्त राशि द्वारा या छोटी– छोटी राशियों का समय–समय पर भुगतानों द्वारा उत्पादों में निवेश का चयन कर सकते हैं। हम इनमें से कुछ उत्पादों पर नजर डालेंगे तथा अपने ग्राहकों के लिए उपयुक्त बचत आधारित उत्पादों के चयन में व्यवसायिक सलाहकारों की महत्वपूर्ण भूमिका को भी उजागर करेंगे।

मुख्य पद			
इस अध्याय में निम्नलिखित पदों एवं बिन्दुओं की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है :			
सम्पति प्रबन्धन कम्पनी (ए एम सी)	मिश्रित करना	ग्रेच्युटी	परम्परागत जमा योजनाऐं
बैंक जमा	प्रयोज्य आय	लॉक–इन अवधि	बचत जरुरतें
बॉण्ड्स	वित्तीय योजना विश्लेषण प्रक्रिया	निवेशकों की सुविधा	अंश/शेयर
बाल योजनाएँ	डाकघर बचतें	म्यूच्अल फण्ड	लेन देन की गतिशीलता
संचयी जमाएँ	निधि प्रबन्धक	ब्याज दरें	कराधान एवं कर नियोजन

अ. बचत/निवेश सलाह की जरुरत

प्रत्येक व्यक्ति की बचत जरुरतें अलग–अलग होती है। अधिकांश लोग निवेश करने में विवेकशील निर्णय नहीं लेते है क्योंकि वे प्रायः उत्पाद के लक्षणों तथा अपनी वित्तीय जरुरतों को पूर्णतः जाने

बिना कुछ उत्पादों में निवेश करते हैं। ये निर्णय प्रायः अपने सहकर्मियों के कहने पर यादृच्छिक रूप से या कर–बचत करने के अन्तिम समय में आखिरी सहारे के रूप में भी लेते है।

इस भाग में हम उन दो मुख्य कारणों के बारे में चर्चा करेंगे जिनके लिए व्यक्ति को अपनी बचत एवं निवेश जरुरतों के सम्बन्ध में व्यवसायिक सलाह लेनी चाहिए।

अ 1 वित्तीय नियोजन प्रक्रिया के बारे में उपेक्षा

व्यक्ति प्रायः अपनी बचत एवं निवेश जरुरतों को पहचानने में असमर्थ होते हैं। वे अपनी दीर्घावधि जरुरतों की तुलना में अल्प अवधि की जरुरतों की पूर्ति पर केन्द्रित रहते है। बचत की तुलना में व्यय की प्रवृति भी अधिक होती है क्योंकि बचत के दूरस्थ भावी लाभों की तुलना में उपभोक्ता वस्तुओं की तात्कालिक जरूरत अधिक स्पष्ट एवं बलवती/दृढ होती है।

व्यवसायिक बीमा अभिकर्त्ता व्यक्ति को वित्तीय नियोजन प्रक्रिया के माध्यम से उसकी मदद करता है। जिससे वे अपनी वर्तमान तथा भावी वित्तीय जरुरतों को पहचान कर सकें। व्यक्ति के दीर्घावधि लक्ष्यों में उसके बच्चों की शिक्षा तथा विवाह के लिए राशि, एक मकान खरीदने के लिए राशि या लिये गये वर्तमान गृह ऋण के शीघ्र पुर्नभुगतान के लिए तथा उसकी सेवानिवृति की योजना के लिए बचत राशि शामिल हो सकती है।

अ 2 उपलब्ध वित्तीय उत्पादों की पूर्ण श्रृंखला के बारे में उपेक्षा

अधिकतर लोगों को बाजार में उपलब्ध विभिन्न बचत एवं निवेश उत्पादों के बारे में जानकारी नहीं होती हैं फलतः वे अपनी वित्तीय जरुरतों की पूर्ति करने वाले समुचित उत्पादों के चयन करने में असमर्थ होते हैं।

इस स्थिति में बीमा अभिकर्त्ता निम्न प्रकार सहायता कर सकता हैः–

- उपलब्ध विभिन्न उत्पादों की अच्छी जानकारी प्राप्त करके ;
- व्यक्ति की वित्तीय जरुरतों की पूर्ति करने वाले उत्पादों का चयन करके ;
- उत्पादों से मिलने वाले कर–बचत युक्त प्रतिफल का मूल्यांकन कर उनमें उपलब्ध कर लाभों को व्यक्ति की कर देयता तथा कर से प्राप्त छूट से तालमेल स्थापित करके ।

सारांश में, अभिकर्त्ता को अपने वित्तीय नियोजन कौशल का उपयोग करके गुणवत्ता युक्त सलाह देकर भावी निवेशक का मार्गदर्शन करना चाहिए । इस प्रकार उद्देश्यपरक तथा आवश्यकता आधारित तरीकों से बचत हेतु प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए तथा मात्र अधिकाधिक प्रतिफल पाने की लालसा को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए।

संस्तुत क्रिया

अपनी पसन्द की किसी कम्पनी के इरडा (IRDA) द्वारा प्रमाणित जीवन बीमा अभिकर्त्ता के पास जायें। यह समझने के लिए उनके साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार आयोजित करें कि वे अपने ग्राहकों की वित्तीय जरुरतों को किस प्रकार पहचानते है तथा चर्चा करें कि किस प्रकार वित्तीय नियोजन प्रक्रिया कार्य करती है।

ब किसी व्यक्ति की बचत जरुरतों को निर्धारित करने वाले कारक

इस भाग में हम किसी व्यक्ति को हो सकने वाली विभिन्न सामान्य तथा विशिष्ट बचत जरुरतों को निर्धारित करने वाले कुछ कारकों पर दृष्टि डालेंगे।

ब 1 सामान्य बचत जरुरतें

व्यक्ति विभिन्न बचत उत्पादों में निवेश करके अपना भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं। जिन लोगों के पास वर्तमान समय में निवेश हेतु पूँजी नहीं हैं उन्हें अपनी आय से बचत द्वारा पूँजी संचित करने की आवश्यकता होती हैं तथा जिनके पास है उन्हें बुद्धिमत्तापूर्वक निवेश करके अपनी पूँजी के मूल्य को बढ़ाने की आवश्यकता है।

ब 1 पूँजी रहित व्यक्ति

किसी व्यक्ति की सही एवं समुचित बचत जरुरतें उसके लिए विशिष्ट होती है। कुछ लोग अपनी किसी विशेष आवश्यकता के लिए बचत करते हैं परन्तु उसके लिए व्यवस्थित एवं सुनियोजित वित्तीय नियोजन नहीं करते है फलस्वरूप वह अपनी विस्तृत एवं विशिष्ट वित्तीय आवश्यकताओं की पहचान नहीं कर पाते हैं। किसी व्यक्ति की विस्तृत वित्तीय नियोजन प्रक्रिया में निम्नांकित सामान्य बचत जरुरतें/वित्तीय लक्ष्य सम्मिलित की जा सकती हैंः–

- किसी मेडिकल आकस्मिकता या अस्थाई नौकरी खो देने के कारण अप्रत्याशित वित्तीय कठिनाईयों की पूर्ति के लिए एक आकस्मिक/ आपातकालीन निधि सृजित करना;
- बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए योजना बनाना एवं निवेश करना ;
- बच्चों के विवाह के लिए योजना बनाना एवं निवेश करना;
- एक पहला मकान या दूसरा मकान (यदि व्यक्ति के पास पहले से एक हो) खरीदना तथा शीघ्रताशीघ्र गृह ऋण का पुनर्भुगतान करना ;
- अन्य लक्ष्यों जैसे एक कार खरीदने, परिवार सहित वार्षिक अवकाश यात्रा की योजना बनाना तथा निवेश करना ; बच्चों की आधारभूत शिक्षा, अपने व्यवसाय के लिए प्रारम्भिक पूँजी संचित करना तथा दान के लिए धन की व्यवस्था करना आदि हेतु योजना बनाना तथा निवेश करना।
- नियमित मासिक आय के बन्द होने पर बिना कोई समझौते किये अपने वर्तमान जीवन स्तर को बनाये रखने के लिए किसी समुचित एवं पर्याप्त सेवानिवृति निधि की योजना बनाना तथा स्थापना करना ।

ध्यान रहे!

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वित्तीय नियोजन एक बार में सम्पन्न होने वाली गतिविधि नहीं है। वांछित निवेश लक्ष्यों की प्राप्ति हो जाने तक इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नियमित रूप से समीक्षा की जरुरत होती है।

ब 1 ब व्यक्ति जिनके पास पूँजी है

पूँजी वाले व्यक्तियों की सामान्यतः निम्न बचत जरुरतें होती है :–

- अपने वर्तमान धन को भावी जरुरतों के लिए जितना संभव हो उतना बढाने की जरुरत। इसमें कोई नया व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रारम्भिक पूँजी, विश्व भ्रमण करना ;

लोकहितकारी उद्देश्यों हेतु दान करना तथा इसी प्रकार की अन्य जरुरतें शामिल होती है।

- यह सुनिश्चित करने की जरुरत कि अपने बच्चों के लिए विरासत रूप में पर्याप्त पूँजी अपने पीछे छोड जायें।
- यह सुनिश्चित करने की जरुरत कि अपनी सेवानिवृति पर एक निश्चित जीवन स्तर बनाये रखने के लिए पर्याप्त राशि हो।

ब 2 किसी व्यक्ति की बचत जरुरतों को निर्धारित करने वाले कारक–

किसी व्यक्ति की यथार्थ आवश्यकताओं को निर्धारित करने वाले मुख्य कारक निम्नानुसार है :–

ब 2 अ निवेश की अवधि

किसी व्यक्ति की धन निवेशित रखने की अवधि की दीर्घता बचत जरुरत निर्धारित करने का एक महत्वपूर्ण कारक है। जीवन बीमा अभिकर्त्ता को चाहिए कि वह व्यक्ति को उस राशि का निर्धारण करने में मदद करें जो उसकी भावी बचत की जरुरत हों। जब व्यक्ति को एक निर्दिष्ट वर्षो की समाप्ति पर एक निर्धारित बचत जरुरत प्राप्त करनी हो तो बचत अवधि की दीर्घता निर्धारित करती है कि कितनी धनराशि एक मुश्त या नियमित अंशदान की श्रृंखला के रूप में निवेश करनी चाहिए।

ध्यान रहे!

बचत लक्ष्य व्यक्ति की आय, आश्रितों की संख्या, उनकी सम्पतियाँ एवं दायित्व, उपलब्ध आय, निवेश का प्रत्याशित प्रतिफल तथा धन निवेशित रखने की इच्छित समयावधि पर निर्भर करते है।

प्रकरण–अध्ययन

गोपाल, दीपक तथा पवनदीप एक प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कम्पनी (एम एन सी) के लिए कार्य कर रहे वेतनभोगी व्यक्ति है तथा वे सभी 60 वर्ष की आयु पर सेवानिवृति हेतु योजना बनाते है।

गोपाल 30 वर्षीय विवाहित, एक बच्चे का पिता है। वह स्वयं के लिए रू. एक करोड़ की सेवानिवृति निधि लक्ष्य बनाता है।

दीपक 40 वर्षीय तथा विवाहित , दो बच्चों का पिता है। वह भी अपने लिए रू. एक करोड़ की सेवानिवृति निधि का लक्ष्य बनाता है।

पवनदीप 50 वर्षीय है तथा वह भी अपने लिए रू. एक करोड़ की सेवानिवृति निधि का लक्ष्य बनाता है।

गोपाल के पास लक्ष्य प्राप्ति के लिए 30 वर्ष, दीपक के पास 20 वर्ष तथा पवनदीप के पास 10 वर्ष है। उनके निवेश के लिए 12 % प्रतिफल के आधार पर निम्न सारणी मासिक निवेश दर्शाती है जो तीनों व्यक्तियों को करना होगा यदि वे अपनी सेवानिवृति लक्ष्य प्राप्त करना चाहते है :–

व्यक्ति का नाम	वर्तमान आयु	सेवानिवृति में बचे वर्ष	सेवानिवृति निधि लक्ष्य	अपेक्षित वार्षिक प्रतिफल	आवश्यक मासिक निवेश
गोपाल	30	30	रू. 1,00,00,000	12 %	रू. 3277
दीपक	30	20	रू. 1,00,00,000	12 %	रू. 10975
पवनदीप	50	10	रू. 1,00,00,000	12 %	रू. 45060

हम उपरोक्त सारणी से देख सकते है कि व्यक्ति को निवेश के लिए जितना अधिक समय मिलता है, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक मासिक निवेश राशि उतनी ही कम होगी। इसलिए सेवानिवृति के लिए बचत जितनी जल्दी संभव हो उतनी जल्दी शुरू कर देना हमेशा अच्छा रहता है।

ध्यान रहे!
अधिक लम्बी अवधि तक चक्रवृद्धि व्यवस्था का परिणाम आश्चर्य चकित कर देता है। चक्रवृद्धि व्यवस्था में, (त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक आधार पर) अर्जित ब्याज मूलधन सहित पुनः निवेशित किये जाने के कारण उच्च प्रतिफल की प्राप्ति होती है।

ब 2 ब अर्जित आय से राशि उपलब्धता

किसी व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला नियमित निवेश उसकी वर्तमान आवश्यकताओं से अधिक उपलब्ध राशि अथवा उसकी सकल आय पर भी निर्भर करता है। अन्ततः यह व्यक्ति की आय, उसके आश्रितों की संख्या तथा उसके वर्तमान दायित्वों पर निर्भर करेगी। अधिशेष/ वर्तमान आवश्यकताओं से अधिक राशि किसी व्यक्ति के सभी मासिक दायित्वों की पूर्ति के पश्चात बची अतिरिक्त धन राशि होती है।

सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में कई बार निवेश हेतु राशि प्रयोज्य या उपलब्ध होगी परन्तु यह राशि भिन्न–भिन्न होगी। उदाहरण के लिए, किसी विवाहित तथा छोटे बच्चे के पिता के उत्तरदायित्व उस व्यक्ति से अधिक होंगे जो विवाहित तथा बड़े बच्चे का पिता हो तथा उसकी तुलना में आय कम होगी परिणामस्वरूप निवेश हेतु उपलब्ध राशि भी कम होगी। जैसे ही व्यक्ति अगले जीवन चक्र में प्रवेश करता जाता है, उसकी आय बढेगी एवं परिणामस्वरूप ज्यादा बचत तथा ज्यादा निवेश भी संभव होगा।

इस प्रकार आप देख सकते है कि एक उचित उत्पाद व्यक्ति की बचत जरुरतों के चयन के सम्बन्ध में ज्यादा लचीलापन देता है।

ध्यान रहे!
याद रखें कि किसी भी व्यक्ति को अत्याधिक बचत तथा निवेश प्रतिबद्धता के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए अर्थात उतना ही निवेश करायें जितना वे आराम से वहन कर सकते है।

ब 2 स वर्तमान दायित्व तथा सम्पतियाँ

व्यवसायिक सलाहकार को व्यक्ति की वर्तमान सम्पतियों एवं दायित्व को ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि ये ग्राहक की निवेश जरुरतों तथा उनमें निवेश के सामर्थ्य दोनों को प्रभावित करती है।

उदाहरण
एक व्यक्ति अपनी सम्पतियों जेसे सोना या अन्य सम्पति का प्रतिभूति के रूप में उपयोग कर क्रेडिट कार्ड में बकाया राशि चुकाने के लिए धन, व्यक्तिगत ऋण चुकाने के लिए धन या बच्चों की उच्च शिक्षा हेतु व्यय के लिए राशि उधार ले सकता है।

एक व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न स्थितियों में जैसे एक गृह ऋण, कार ऋण, बच्चों के लिए शिक्षा ऋण, व्यक्तिगत ऋण तथा क्रेडिट कार्ड हेतु ऋण लेकर दायित्व निर्वहन कर सकता है तथा व्यवसायिक सलाहकार को उनकी बचत तथा निवेश सलाह के रूप में ग्राहक के दायित्वों पर ध्यान देना चाहिए।

इस पर विचार करें
आपके परिवार की बचत जरुरतें क्या है ? विभिन्न जरुरतों की सूची बनाइये।

स बचत उत्पादों के लक्षण तथा लाभ

अब हम विभिन्न बचत उत्पादों द्वारा प्रस्तुत मुख्य लक्षणों एवं लाभों पर नजर डालेंगे तथा विचार करेंगे कि इन लक्षणों के आधार पर यह उत्पाद उस व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कितने उपयुक्त हैं।

स 1 पूँजी या आय वृद्धि

कुछ बचत उत्पाद नियमित आय (एक बैंक सावधि जमा द्वारा भुगतान किया गया ब्याज) प्रदान करते है, कुछ पूँजी वृद्धि (सोना) प्रदान करते है तथा अन्य दोनों का एक मिश्रण (समता अंश) प्रदान करते है। इन सभी उत्पादों की इस अध्याय में बाद में चर्चा की जायेगी। याद रखे कि किसी व्यक्ति का निवेश उद्देश्य उत्पाद के निवेश प्रोफाइल से मेल खाना चाहिए।

स 2 गारन्टी

कुछ उत्पाद गारंटीड प्रतिफल के साथ उपलब्ध होते है, जबकि कुछ परिवर्तनीय प्रतिफल प्रदान करते है तथा अन्य गारंटीड तथा परिवर्तनीय प्रतिफलों का मिश्रण प्रदान करते है। अतः उत्पाद का चयन ग्राहक के विशिष्ट जोखिम प्रोफाइल पर आधारित होना चाहिए।

उदाहरण
ए बी सी बीमा कम्पनी ने एक गारंटीड प्रतिफल वाले बीमा उत्पाद प्रस्तुत किए है। इस उत्पाद के लिए कम्पनी निम्न वृद्धि की गारंटी देती है :–

- एक पाँच वर्षीय पॉलिसी अवधि के लिए रू. 60 प्रति हजार प्रति वर्ष परिपक्वता बीमा धन।
- एक दस वर्षीय पॉलिसी अवधि के लिए रू. 65 प्रति हजार प्रति वर्ष परिपक्वता बीमा धन।

इसका प्रभावी अर्थ है कि ए बी सी बीमा कम्पनी एक पाँच वर्षीय तथा दस वर्षीय अवधि पर 6 % तथा 6.5 % प्रतिफल की गारंटी देती है।

स 3 लॉक–इन अवधि

अधिकांश बचत उत्पादों में एक सशर्त लॉक–इन अवधि होती है जिसमें व्यक्ति द्वारा निधि से आहरण नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण
एक कर बचत प्रदान करने वाली बैंक सावधि जमा में निवेशित राशि पर पाँच वर्ष की लॉक–इन अवधि होती है। अतः इस अवधि के दौरान निवेशक सावधि जमा से अपनी धन राशि आहरित नहीं कर सकता है। इस सावधि जमा के विरूद्ध ऋण भी नहीं ले सकते है, जैसे वे सामान्यतः अन्य बैंक जमाओं के मामले में ले सकते है।

इक्विटी–लिंक्ड बचत योजनाओं (कर बचत युक्त म्यूच्अल फण्ड) में निवेश पर तीन वर्ष की लॉक–इन अवधि लागू होती है। इस अवधि के दौरान व्यक्ति इन म्यूच्अल फण्ड्स से धन राशि आहरित नहीं कर सकता है। (लेकिन वे कुछ अन्य म्यूच्अल फण्ड्स के मामले में ऐसा कर सकते है जिनमें लॉक–इन अवधि नहीं होती है।)

स 4 शास्तियाँ

शास्तियाँ स्थायी अवधि संविदाओं से अपरिपक्व निधि आहरण के साथ सम्बद्ध होती है। यह एक महत्वपूर्ण पहलू है जिस पर ऐसे उत्पादों में निवेश करने से पूर्व विचार/आंकलन किये जाने की जरुरत होती है।

उदाहरण

अजय एक बैंक में 2 वर्षीय आवर्ती जमा खाता खुलवाता हैं जिसमें अजय रू.1000 मासिक जमा करवाता है। सात माह बाद अजय मासिक किश्तें जमा कर पाने में असमर्थ हो जाता है। वस्तुतः वह जमा राशि का आहरण भी करना चाहता है जो उसने पिछले सात माह में जमा किये तथा खाता बन्द करवाना चाहता है। अतः इस मामले में बैंक दो वर्षीय निर्धारित अवधि से पूर्व धन का अपरिपक्व आहरण करने तथा खाता बन्द करने के लिए एक शास्ति प्रभारित करेगा।

कई म्यूच्अल फण्ड में लॉक–इन अवधि छः माह या एक वर्ष होती है। यदि ग्राहक लॉक–इन अवधि से पूर्व अपना धन आहरित करता हैं, तो म्यूच्अल फण्ड में से एक निकासी प्रभार काटकर (लॉक–इन अवधि के भीतर आहरण की कटौती) शेष राशि का भुगतान करता है।

स 5 जोखिम

सभी बचत उत्पादों में एक निश्चित स्तर का जोखिम रहता है जिसे निम्न जोखिम, मध्यम जोखिम तथा उच्च जोखिम के रूप में रेटेड(दर निर्धारित) किया जा सकता है। निम्न जोखिम उत्पाद उच्च जोखिम उत्पादों की तुलना में कम प्रतिफल प्रदान करते है। अतः उत्पाद का चयन व्यक्ति की परिस्थितियों एवं जोखिम प्रोफाइल के आधार पर सावधानी से करना चाहिए।

उदाहरण

किसी व्यक्ति की जोखिम वहन क्षमता उसकी परिस्थितियों के आधार पर अलग–अलग होगीः–

- एक युवा व्यक्ति जो अभी कॉलेज से निकला है तथा उपार्जन करना शुरू किया हैं, की अपने पहले 20 वर्षों में उच्च जोखिम अभिलाषा हो सकती है अपनी आयु के दूसरे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में आय अर्जन प्रारम्भ करता है उच्च जोखिम वहन क्षमता रखता है क्योंकि उसका दायित्व अपेक्षाकृत कम होगा।
- एक विवाहित व्यक्ति जिसके बच्चे हैं, को उसके जीवन के बीच के तीस वर्षों में, उच्च जोखिम युक्त निवेशों में निवेश की सलाह नहीं दी जाती हैं क्योंकि उनकों अधिक दायित्वों की पूर्ति करनी होती है अतः उनकी जोखिम वहन क्षमता औसत हो सकती है।
- एक व्यक्ति जो अपनी आयु के पाँचवें दशक के उत्तरार्द्ध में हो तथा जिसके जीवन की कार्यशील अवधि समाप्ति के निकट है, की बहुत कम जोखिम वहन क्षमता होती है।

स 6 खरीदने एवं बेचने की प्रक्रिया

खरीदने एवं बेचने की प्रक्रिया दो कारणों से महत्वपूर्ण होती हैः किसी एकल निवेशक को सुविधा तथा लेनदेन (क्रय–विक्रय) समव्यवहार में गति।

उदाहरण

बचत उत्पाद विभिन्न साधनों जैसे किसी एकल अभिकर्ता, इंटरनेट, कॉल सेन्टर, ए टी एम तथा निगमित अभिकर्ताओं जैसे बैंक तथा दलाल आदि के माध्यम से खरीदे जा सकते है।बचत उत्पाद खरीदने की प्रक्रिया सामान्यतया सरल एवं सीधी होती है बशर्ते व्यक्ति सभी दस्तावेज तुरन्त जमा करवायें। इंटरनेट के माध्यम से बचत उत्पादों का क्रय न केवल एकल निवेशक को सुविधा प्रदान करता है बल्कि लेनदेन समव्यवहार /ट्रान्ज़ैक्शन की गति भी बढाता है।

कोई व्यक्ति दलाल की वेबसाइट के माध्यम से शेयर खरीद व बेच सकता है। यह उनके लिए सुविधाजनक है तथा लेनदेन का तत्काल कार्यान्वित होना सुनिश्चित करता है। उन्हें दलाल के कार्यालय जाने की जरुरत नहीं होती तथा दलाल के कार्यालय या कॉल सेन्टर से बात करने की जरुरत भी नहीं होती है।

इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपने कार्य से अवकाश पर हो तो उस दौरान भी वह बैंक के कॉल सेन्टर या वेबसाइट से बैंक की स्थायी जमा ले सकता है इस तरह उन्हें बैंक शाखा जाने की जरुरत नहीं होती है। यह भी ग्राहक की सुविधा सुनिश्चित करता है।

स 7 लोच्यता

लोच्यता से तात्पर्य विभिन्न निवेशों को एक प्रकार से दूसरे प्रकार के निवेश में परिवर्तित करने तथा किसी अंशदान की भुगतान पद्धति में परिवर्तन या अस्थायीद रूप से बन्द करने की सुविधा से है। उत्पाद के यह गुण उसके प्रति आकर्षण को आसानी से बढा सकते है। उत्पाद की लोच्यता को प्रभावित किये बिना उत्पाद की निधि में से आंशिक आहरण की अनुमति भी देते है। सामान्यतः उत्पाद में जितनी अधिक लोच्यता होती है वह उतना ही अधिक उपयुक्त होता है। तथापि अंशदान में अस्थायी व्यवधान तथा आंशिक आहरण की अनुमति जैसे गुण दीर्घकालिक निवेश प्रतिफल में कमी ला सकते है।

उदाहरण

यूनिट लिंकड बीमा योजनाएँ (ULIPs) पॉलिसी धारकों को उनके निवेश को एक निधि (समता) से दूसरी (ऋण) में जुड.ने की अनुमति देती है। वे पॉलिसीधारकों को प्रीमियम अवकाश (अस्थायी रूप से अंशदान बन्द करना) तथा आंशिक आहरण की अनुमति भी देती है।

इस पर विचार करें

कम्पनियाँ अपने निवेश उत्पादों को उनसे सम्बद्ध जोखिम के अनुसार रेट निर्धारित करती है। ये उत्पाद उच्च जोखिम , मध्यम जोखिम तथा निम्न जोखिम के रूप में रेटेड किये जाते है। किस प्रकार के ग्राहक उपरोक्त वर्णित निवेश उत्पाद वर्गों में से प्रत्येक में निवेश करना चाहेंगे?

द बचत उत्पादों के प्रकार

इस भाग में हम निम्नलिखित प्रकार के बचत उत्पादों की चर्चा करेंगेः

चित्र 6.1

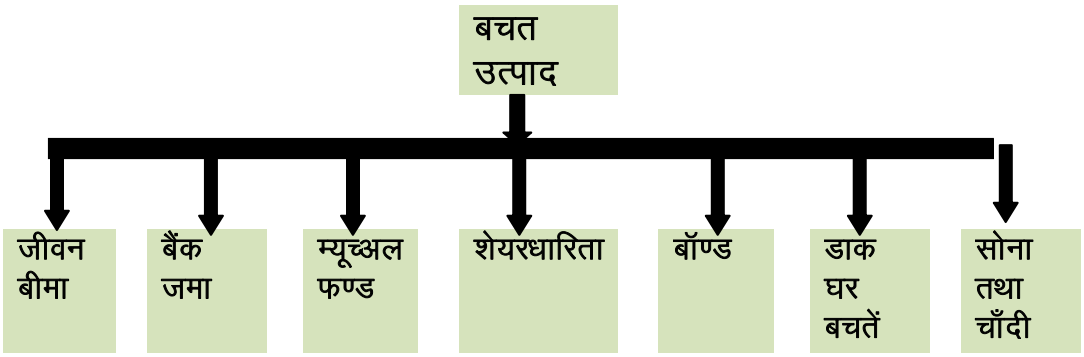

द 1 जीवन बीमा

अनेक जीवन बीमा उत्पाद प्राथमिक जीवन कवर के साथ ही बचत तत्व के साथ उपलब्ध हैं। प्रीमियम का बचत घटक बीमा कम्पनी द्वारा पॉलिसीधारक की ओर से निवेशित किया जाता है तथा अर्जित प्रतिफल बोनस के रूप में पॉलिसीधारकों के मध्य सांझा वितरित किया जाता है।

सहभागिता योजनाओं जैसे बन्दोबस्ती योजनाओं तथा आजीवन योजनाओं में बीमा कम्पनी निवेश जोखिम वहन करती है। यूलिप (ULIPs) में निवेश जोखिम पॉलिसीधारकों द्वारा वहन किया जाता है।

सुरक्षा जरूरतों के अतिरिक्त , जीवन बीमा उत्पाद निवेशकों के दीर्घावधि लक्ष्यों जैसे बच्चों की शिक्षा तथा विवाह , सेवानिवृति तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए दीर्घकालिक निधि के निवेश के उत्तम विकल्प होते है।

द 2 बैंक जमा

बैंक जमा प्राचीनतम तथा अधिकतम पसंद किये जाने वाले उत्पाद है। वे ऐसे साधन (उपकरण) हैं जिनमें कोई व्यक्ति एक बैंक में एक निश्चित अवधि के लिए निश्चित ब्याज दर पर एकमुश्त राशि का निवेश करता है।

बैंक जमा उपकरण सामान्यतया स्थायी जमा या सावधि जमा के रूप में जानी जाती है। बैंक जमा कई अन्य निवेश उत्पादों की तुलना में सुरक्षित मानी जाती है तथा वे कम प्रतिफल प्रदान करती है। बैंक जमा में राशि, अवधि, ब्याज दर तथा ब्याज भुगतान की विधि जमा के प्रारम्भ में निर्धारित कर दी जाती है।

निवेशक तीन प्रकार की जमा उपकरणों में से चयन कर सकता है।–

परम्परागत जमा	इस प्रकार की जमा उपकरणों में जमा करते समय जमाकर्ता द्वारा चयनित आधार (मासिक/त्रैमासिक/अर्द्धवार्षिक या वार्षिक) पर बैंक सम्बन्धित व्यक्ति के जमा राशि खाते में ब्याज का भुगतान करते हैं।
संचयी जमा उपकरण	इस प्रकार की जमा के साथ बैंक अवधि के अन्त में मूलधन तथा कुल ब्याज का भुगतान करता है। संचयी जमा में ब्याज साधारणतया त्रैमासिक चक्रवृद्धि आधार पर मिश्रित दिया जाता है।

आवर्ती जमा उपकरण	इस प्रकार की जमा उपकरणों में निवेशक चयनित अवधि तक प्रतिमाह एक निर्धारित राशि जमा करता है। ये जमा योजनाऐं उन लोगों के लिए आदर्श होती हैं जो अपने कुछ वित्तीय लक्ष्यों जैसे बच्चों की शिक्षा, विवाह, वाहन की खरीद आदि के लिए धन संचित करना चाहते हैं।

इन जमा योजनाओं में ब्याज दर परिपक्वता अवधि के आधार पर परिवर्तित होती है। बैंक ब्याज के रूप में प्रतिफल प्रदान करते हैं। जमा योजना शुरू करवाते समय बैंक में जमा कराया गया मूलधन परिपक्वता पर जमाकर्ता को लौटा दिया जाता है।

द 3 म्यूच्अल फण्ड

एक म्यूच्अल फण्ड वह निधि होता है जो एक समान प्रयोजन (उद्देश्य) वाले लोगों को एक साथ लाता है। इन लोगों से एकत्रित धन उनकी ओर से निवेश कर दिया जाता है तथा प्रतिफल उनके बीच समान रूप से वितरित कर दिया जाता है। म्यूच्अल फण्ड का प्रबन्धन किसी सम्पति प्रबन्धन कम्पनी (AMC) द्वारा किया जाता है। ए एम सी (AMC) योजना के प्रयोजनों(उद्देश्यों) के अनुसार शेयरो(शेयरों), ऋण पत्रों, वित्त बाजार आदि में निवेश करती है। ए एम सी (AMC) योग्य तथा अनुभवी निधि प्रबन्धकों (जिन्हें पोर्टफोलियों प्रबन्धक भी कहा जाता है) को नियुक्त करती है जो निवेशक द्वारा चयनित निधि(या योजना) के प्रकार के आधार पर निधि में निवेश करने हेतु उत्तरदायी होते है।

म्यूच्अल फण्ड में निवेश करने का मुख्य लाभ जोखिम, विविधिकरण होता है। किसी व्यक्ति की निधि को विभिन्न प्रतिभूतियों में फैलाकर (निवेश कर)न्यूनतम जोखिम लेते हुऐ अधिकतम प्रतिफल प्राप्त किया जाता है।

म्यूच्अल फण्ड दो प्रकार की आय प्रदान करते हैः–

- समय समय पर म्यूच्अल फण्ड योजना द्वारा घोषित लाभांशों के रूप में नियमित आय ; तथा
- पूँजी वृद्धि ; जहाँ म्यूच्अल फण्ड इकाईयों (यूनिटों) को खरीदे गये मूल्य से अधिक मूल्य पर बेचा जाता है।

तथापि , म्यूच्अल फण्ड निवेशों में पूँजी की हानि भी हो सकती है। म्यूच्अल फण्ड योजना द्वारा जिन कम्पनियों में निवेश किया गया हो यदि उनका वित्तीय प्रदर्शन खराब रहता है, तो उन कम्पनियों के अंश (शेयर) मूल्यों में गिरावट होगी। इससे म्यूच्अल फण्ड निवेशकों के निवेश मूल्य में कमी आयेगी जो कि इस योजना की यूनिटों में निवेशित किये गये थे। इस प्रकार आप देख सकते है कि एक म्यूच्अल फण्ड योजना का प्रदर्शन उन प्रतिभूतियों के प्रदर्शन पर आधारित होता है जिनमें योजना द्वारा निवेश किया जाता है।

द 4 अंश(शेयर)

समता अंश(इक्विटी शेयर) किसी कम्पनी का स्वामित्व प्रदर्शित करते है। जब कभी कम्पनी अपना विकास, कोई नई उत्पादन इकाई स्थापित करने, कोई अन्य कम्पनी अधिग्रहण करने, कार्यशील पूँजी आदि के लिए धन प्राप्त करना चाहती है तो कम्पनी की शेयरधारिता (कम्पनी में स्वामित्व) जनता को प्रस्तावित करती है।

उदाहरण

कल्पना करते है कि एक कम्पनी की कुल पूँजी रू. 10,00,000 में रू. 10 के 1,00,000 समता अंश(इक्विटी शेयर) है। यदि कम्पनी के स्वामी (प्रवर्तक) 10,000 शेयर जनता को प्रस्तावित करके कम्पनी के विस्तार के लिए धन प्राप्त करना चाहती है; तब यह कहा जाता है कि स्वामी अपने स्वामित्व का 10% जनता के पक्ष में तरलीकृत कर रहे है। यदि कोई व्यक्ति कुल 10,000 शेयरों में से 100 शेयर अधिग्रहीत करता है, तो इसे कम्पनी की शेयरधारिता (स्वामित्व) का 0.1% (1,00,000 शेयरों मे से 100 शेयर) का अधिग्रहण होना कहा जाता है।

एक बार जब शेयर जनता को प्रस्तावित किये जाते है, तो शेयरो का खरीदना व बेचना स्टॉक एक्सचेंज के माध्यम से होता रहता है। स्टॉक एक्सचेन्ज एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है तथा व्यक्तियों के मध्य शेयरों के खरीदने एवं बेचने के लिए एक व्यापारिक मंच प्रस्तुत करता है। कोई व्यक्ति स्टॉक एकसचेन्ज से सीधे शेयर खरीद एवं बेच नहीं सकते है; उनको अपना खरीद व बेचने का आदेश स्टॉक एक्सचेंज के स्टॉक दलालों(सदस्यों) के माध्यम से देना होता है। भारत में दो मुख्य स्टॉक एकसचेंज बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) तथा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) है।

शेयरों को खरीदने वाले व्यक्ति लाभांश द्वारा कम्पनी के लाभ में हिस्सा प्राप्त करने के अधिकारी होते है। लाभ शेयरधारकों द्वारा खरीदे गये शेयरों की संख्या के अनुपात में वितरित किया जाता है।

इक्विटी शेयर निवेशक को तीन प्रकार की आय प्रदान करता हैः–

लाभांश आय	कम्पनी अर्जित लाभ का एक विनिर्दिष्ट भाग शेयरधारकों को समय–समय पर घोषित लाभांश के रूप में वितरित करती है।
बोनस शेयर	जब एक कम्पनी के पास एक बडी रोकड. संचित हो जाती है तो इसे लाभांशों के रूप में वितरित करने के बजाय बोनस शेयर (मुक्त शेयर) जारी करके पूंजीकृत किया जाता है। बोनस शेयर कम्पनी की वर्तमान इक्विटी शेयर पूँजी के अनुपात में जारी किये जाते है। बोनस शेयर जारी करना प्रबन्धकों द्वारा कम्पनी के उत्तम वित्तीय प्रदर्शन हेतु शेयरधारकों का धन्यवाद ज्ञापन तथा कम्पनी के भावी/उच्चतर प्रदर्शन की आशा व्यक्त करना है।
पूँजी वृद्धि	जब कोई शेयर कम मूल्य पर खरीदा व अधिक मूल्य पर बेचा जाता है तो इन दोनो मूल्यों के अन्तर को लाभ या पूँजी वृद्धि के रूप में जाना जाता है।

ध्यान रहे!

किसी निवेशक को इक्विटी आधारित निवेश उपकरणों में निवेश से पूँजी हानि भी हो सकती है। समता निवेशों पर प्रतिफल कम्पनी के वित्तीय प्रदर्शन पर निर्भर करता है। यदि शेयर अधिक मूल्य पर खरीदा गया है तथा बाद में कम्पनी के खराब वित्तीय प्रदर्शन के कारण कम मूल्य पर बेचा जाता है तो इससे पूँजी हानि होगी।

द 5 बॉण्डस

बॉण्डस बैंक स्थायी जमा उपकरणों के समान होते है जो निवेशकों को ब्याज के रूप में नियमित आय प्रदान करते है। बॉण्डस के क्रेता एवं विक्रेता के मध्य भी लेनदेन (व्यापार)किया जा सकता है। बैंक के अलावा सरकार, कम्पनियों या अन्य संस्थाओं द्वारा जनता से वित्त(धन) प्राप्ति के लिए बॉण्ड जारी किये जाते है। सरल शब्दों में, कोई बॉण्ड निवेशकों द्वारा बॉण्ड जारीकर्ता को प्रदान किया गया ऋण होता है। अतः बॉण्डस के मामले में निवेशक लेनदार होते है जो ऋण (बॉण्ड) पर ब्याज

प्राप्त करते है। अवधि की समाप्ति के पश्चात् मूल राशि (मूल धन) लेनदार को वापस लौटा दिया जाता है।

कई प्रकार के बॉण्डस उपलब्ध हैं जिनमें निवेशक निवेश कर सकता हैं, जिनमें शामिल है :–

- निगमित बॉण्ड्स;
- सरकारी प्रतिभूतियाँ;
- व्यापारिक पत्र; तथा
- ट्रेजरी बिल

द 6 डाक घर बचतें

भारत में डाक घर कई प्रकार के बचत उत्पाद प्रस्तुत करते है जैसेः–

- राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र(NSC)
- किसान विकास पत्र (KVP)
- लोक भविष्य निधि (PPF)
- डाक घर बचत खाता
- आवर्ती बचत खाता
- सावधि जमा खाता
- डाक घर मासिक आय योजना (POMIS)
- वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (SCSS)

ये सभी उत्पाद ऐसे हैं जिनमें किसी व्यक्ति को निश्चित समय अवधि के लिए एकमुश्त राशि का निवेश करना होता है (सिवाय आवर्ती जमा योजना जिसमें नियमित निवेश किया जाता है तथा बचत खाते के)। निवेशक एक निश्चित दर पर ब्याज अर्जित करता हैं जिसे निवेश के समय विनिर्दिष्ट किया जाता है।

द 7 सोना तथा चाँदी में निवेश

भारत विश्व में सोने के सबसे बडे. आयातकों में से एक है तथा भारत में सोना और चाँदी सर्वाधिक लोकप्रिय तथा प्राचीनतम बचत साधनों मे से एक है। सोने एवं चाँदी में निवेश करने के विभिन्न तरीके है परन्तु भारत में अत्यन्त लोकप्रिय आभूषणों में निवेश है। सोने एवं चाँदी में निवेश के अन्य तरीकों में बैंको तथा आभूषण विक्रेताओं द्वारा बेचे जाने वाले बार तथा सिक्के शामिल है। भौतिक रूप से सोने के स्थान पर सोने के इलेक्ट्रोनिक रूप में निवेश भी बढ रहा हैं। गोल्ड ई टी एफ(विनिमय व्यापारिक निधि) म्यूच्अल फण्ड के समान होते है जिनमें शेयरों के समान किसी स्टॉक एक्सचेन्ज में इलेक्ट्रॉनिक रूप में स्वर्ण इकाईयों में भी लेनदेन किया जा सकता है। गोल्ड ई टी एफ में एक इकाई स्वर्ण के एक ग्राम या आधे ग्राम को प्रतिलक्षित या व्यक्त करती है।

सोने तथा चाँदी में निवेश करने के कारणों में शामिल हैः–

- अच्छा (उच्च)प्रतिफल;
- पोर्टफोलियो विविधिकरण;
- मुद्रास्फीति से बचाव(सुरक्षा); तथा
- अनिश्चितताओं हेतु बीमा।

प्रश्न 6.1

एक म्यूच्अल फण्ड क्या है?

य. बचत उत्पादों पर कराधान एवं मुद्रास्फीति का प्रभाव

किसी व्यक्ति का वैयक्तिक कराधान दायित्व उपयुक्त बचत उत्पादों के चयन में विशेष प्रभाव डालता है।

य 1 कराधान का प्रभाव

वित्तीय वर्ष की अन्तिम तिमाही बीमा अभिकर्ताओं तथा अन्य वित्तीय सलाहकारों के लिए व्यस्ततम समय होता है। वर्ष के दौरान यह ऐसा समय होता है जिसमें वेतनभोगी तथा अन्य व्यक्ति अपनी आय में से न्यूनतम कर कटौती कराने के लिए कराधान नियोजन द्वारा कर बचत उत्पादों में निवेश कराने में व्यस्त होते है। वस्तुतः कहा जा सकता है कि कुछ लोग विशुद्ध रूप से अपने कर दायित्वों को न्यूनतम स्तर पर लाने के लिए निवेश करते है।

बचतों एवं निवेशों के प्रति यह गलत दृष्टिकोण हैं क्योंकि किसी विशेष निवेश उत्पाद का चयन करने से पूर्व एक उचित वित्तीय योजना बनाने की जरूरत होती है। इस भाग में हम बचत उत्पादों के कराधान प्रभाव पर दृष्टिपात करेंगे।

य 1 आय कर अधिनियम 1961

यह अधिनियम 1 अप्रेल 1962 से प्रभाव में आया तथा तबसे विभिन्न संशोधन किऐ जा चुके है। प्रत्येक बड.ा संशोधन एक वित्त अधिनियम (केन्द्रीय बजट प्रस्तुति के समय) तथा अन्य संशोधन अधिनियमों के माध्यम से प्रभावी होता है। इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (CBDT) आय कर के विभिन्न प्रावधानों को स्पष्ट (व्याख्या) करने के लिए परिपत्र जारी करता है।

प्रभावी कराधान नियोजन पर काम करते समय, सरकार द्वारा प्रदत्त छूट तथा कटौतियों को समझना आवश्यक होता है। निवेशक प्रचलित आय कर नियमों के अन्तर्गत आय कर अधिनियम की विभिन्न धाराओं कराधान में निम्नांकित कटौतियों का लाभ उठा सकते है।

य 2 अ धारा 80C

धारा 80C के अन्तर्गत निम्नलिखित उत्पादों में किये गये निवेशों के लिए कर योग्य आय में से कटौती स्वीकृत की जाती हैः–

- परम्परागत उत्पादों के लिए भुगतान किया गया जीवन बीमा प्रीमियम।
- यूनिट लिंक्ड बीमा योजनाएँ (ULIPs)।
- पेंशन योजनाएँ।
- गृह ऋण के मूलधन घटक का पुर्नभुगतान।
- कर्मचारी भविष्य निधि (EPFs)।
- यूनिट लिंक्ड बचत योजनाएँ (ELSs)।
- बच्चों के लिए भुगतान किया गया शिक्षण शुल्क।

- पाँच वर्षीय कर बचत बैंक जमा योजनाऐं।
- लोक भविष्य निधि (PPFs)।
- राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र (NSCs)।
- वरिष्ठ नागरिक बचत योजनाएँ (SCSs)।
- स्टैम्प शुल्क तथा पंजीकरण शुल्क।
- आधारभूत संरचना बॉण्ड्स।
- पेंशन निधि।
- डाक घर पाँच वर्षीय सावधि जमा।

ध्यान रहें!
वित्तीय उत्पादों की उपरोक्त सूची वित्तीय वर्ष 2010/11 के लिए है। यह सूची समय–समय पर संशोधित की जाती है। कर योग्य आय में से कटौती के रूप में अनुमन्य राशि की प्रत्येक वर्ष समीक्षा की जाती है।

वर्ष 2010 के केन्द्रीय बजट में, धारा 80 CCF प्रस्तुत की गई जिसमें आधारभूत संरचना बॉण्ड्स में एक विनिर्दिष्ट सीमा तक निवेश पर कर योग्य आय में से कटौती स्वीकृत की जाती है। यह कटौती धारा 80C के अन्तर्गत उपरोक्त कटौती के अतिरिक्त है।

य 2 ब धारा 80 D

धारा 80D द्वारा किसी व्यक्ति, उसके पति/ पत्नी तथा बच्चों के लिए स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम के भुगतान पर कर योग्य आय में से कटौती स्वीकृत करती है। अभिभावकों (माता–पिता) हेतु स्वास्थ्य बीमा के लिए किये गये प्रीमियम भुगतान पर एक अतिरिक्त कटौती स्वीकृत की जाती है। वरिष्ठ नागरिकों हेतु भुगतान किये गये प्रीमियम के लिए अन्य व्यक्तियों की तुलना में कर योग्य आय से एक उच्चतर कटौती स्वीकृत की जाती है।

कर योग्य आय में से कटौती के रूप में स्वीकृत राशि की भी समय–समय पर समीक्षा की जाती है।

य 2 स धारा 80 DD

इस धारा के अन्तर्गत कर योग्य आय में से मेडिकल चिकित्सा/ प्रशिक्षण/ एक अपंग/विकलांग आश्रित के पुर्नवास पर किये गये व्यय(विनिर्दिष्ट सीमा तक) के लिए कटौती स्वीकृत की जाती है। ये व्यय किसी व्यक्ति या आश्रित सम्बन्धी की अयोग्यता, रोग/बीमारी (इस धारा के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट) की चिकित्सा के लिए किये जा सकते है। इस कटौती का लाभ लेने के लिए निर्धारित प्रारूप में किसी मेडिकल प्रेक्टीशनर द्वारा प्रदान किए गये एक प्रमाण पत्र की जरुरत होती है।

य 2 द धारा 80 E

धारा 80 E के अन्तर्गत एक शैक्षिक ऋण पर चुकाया गये ब्याज की कर योग्य आय में से कटौती स्वीकृत की जाती है।

य 2 य धारा 24 (b)

धारा 24 (b) के अन्तर्गत किसी गृह ऋण पर भुगतान किया गये ब्याज की (विनिर्दिष्ट प्रावधानों के अधीन) कर योग्य आय में से कटौती स्वीकृत की जाती है।

प्रश्न 6.2

पाँच वित्तीय उत्पादों की सूची बनाइये जिनके लिए कोई व्यक्ति आय कर अधिनियम की धारा 80C के अन्तर्गत कर कटौती का लाभ प्राप्त कर सकता है।

य 3 मुद्रास्फीति प्रभाव

हमने अध्याय 5 में मुद्रास्फीति का बीमा कवर पर पड.ने वाले प्रभाव को जाना है। वित्तीय नियोजन करते समय निवेशक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भावी खर्चों की पूर्ति हेतु आवश्यक राशि की गणना करने में वस्तुओं के मूल्य पर मुद्रास्फीति के प्रभाव को ध्यान में रखा जाये। यदि मुद्रास्फीति दर 5% हो तथा किसी बैंक स्थायी जमा मे आप निवेश पर 8% ब्याज उपार्जित करते है, तो आप मुद्रास्फीति के कारण कुल 3% प्रतिफल अर्जित करेंगे।

निःसन्देह, वास्तविक जीवन में परिस्थिति इतनी सरल नहीं होती है। मुद्रास्फीति दर का सही सही पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता है। यह उच्च या शायद निम्न भी हो सकती है। आने वाले समय में आर्थिक आवश्यकताओं की गणना करने में पिछले 5 या 10 वर्षों तक रही वास्तविक मुद्रास्फीति दर से उच्च दर पर मुद्रास्फीति हेतु संयोजन एवं प्रावधान करना अच्छा रहता है। निवेशों पर प्रतिफल कराधान के अधीन भी हो सकता है। मुद्रास्फीति तथा कराधान दोनो सम्मिलित रूप से वास्तविक प्रतिफल का क्षरण (कम) करते है अतः प्रतिफल पूर्वानुमान से कम हो सकता है।

परिणामतः एक निवेशक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि निवेशों पर प्रतिफल मुद्रास्फीति एवं कराधान कटौतियाँ करने के बाद उनको समुचित आय प्रदान करने हेतु पर्याप्त होना चाहिए।

र बचत उत्पादों पर ब्याज दरों का प्रभाव

बचत तथा निवेश उत्पादों में लागू ब्याज दरों में परिवर्तन उनके आकर्षण को प्रभावित करेगी तथा यह किसी निवेशक के निवेश निर्णयों पर विपरीत प्रभाव डाल सकती है।

इस भाग में हम ब्याज दरों में परिवर्तन के प्रभावों पर दृष्टिपात करेंगे।

र 1 ब्याज दरों में वृद्धि

ब्याज दरों में वृद्धि होने पर जमा तथा ऋणों पर ब्याज दर बढती है। ब्याज दरों में वृद्धि का निर्णय देश के केन्द्रीय बैंक (भारतीय रिजर्व बैंक) द्वारा तब लिया जाता है जब बचत को प्रोत्साहित तथा अनावश्यक खर्चों के लिए ऋण लेने से लोगों को निरूत्साहित करके ऋण की मांग में कमी करना देश की अर्थव्यवस्था के हित में होता है। ब्याज दरों में वृद्धि के प्रभाव निम्न प्रकार हैः

- बैंक और वित्तीय संस्थानों से उत्पाद (ऋण) लेने की मांग घटती है क्योंकि व्यक्तियों के लिए ऋण महंगा हो जाता है अतः वे खरीददारी स्थगित कर देते है।
- दूसरी ओर, उच्च ब्याज दरों के साथ बैंक जमा योजनाऐं अधिक आकर्षक हो जाती है अतः लोग उनका चयन करते है परिणामस्वरूप बचत राशि में वृद्धि होती है। जिन बॉण्डों में अधिक ब्याज मिलता है उनकी खरीद बढ. जाती है।
- तथापि, एक उच्च ब्याज दर परिदृश्य स्टॉक बाजारों के लिए अच्छा नहीं होता है। कम्पनियों के लिए उधार लेने की लागतें बढ जाती हैं क्योंकि उच्च ब्याज भुगतान

करना पड.ता है। यह कम्पनियों की लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है तथा इससे शेयरों का विक्रय बढ़ाना आवश्यक हो जाता है परिणामस्वरुप शेयर मूल्य में कमी आ जाती है।

र 2 ब्याज दरों में कमी

ब्याज दरों में कमी होने की स्थिति में, ऋण सस्ते हो जाते है तथा कम्पनियों द्वारा किये गये निवेश में वृद्धि होती है। ऐसा अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने के लिए, किया जाता है ताकि निवेश बढे. तथा वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग में वृद्धि हो।ब्याज दरों में कमी के प्रभाव निम्नानुसार हैः–

- कम ब्याज दरें ऋण उत्पादों की मांग बढाती है। निवेशक वित्तीय आस्तियों (सम्पतियों) को क्रय करने हेतु ऋण लेते है परिणामस्वरूप उपभोग में वृद्धि होती है।
- निम्न ब्याज दरों के कारण बैंक जमा योजनाओं में निवेश की तुलना में अन्य वित्तीय उत्पादों (जैसे इक्वीटीज तथा अचल सम्पति में निवेश) को प्राथमिकता दी जाती है।
- ऐसे निवेशक जो उच्च ब्याज दरों पर पहले ही बॉण्ड्स एवं बैंक जमा योजनाओं में निवेश (लॉक्ड – इन) कर चुके है, ब्याज दरों के गिरने पर लाभप्रद स्थिति में होते है।

प्रश्न 6.3

बचत उत्पादों पर ब्याज दरों में कमी के प्रभावों की संक्षिप्त परिचर्चा कीजिये।

ल बचत जरूरतों की प्राथमिकता निर्धारित करना

प्रत्येक व्यक्ति की बचत जरूरतें अलग–अलग होती है, अतः बचत जरूरतों की प्राथमिकता निर्धारित करने की प्रक्रिया का मानक निर्धारित करना कठिन होता है। जीवन बीमा अभिकर्ता व्यक्तियों (ग्राहकों) की बचत जरूरतों की प्राथमिकता निर्धारण एवं विश्लेषण करने में सहायता प्रदान कर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस अध्याय के अन्तिम भाग में हम कुछ दिशानिर्देशों की चर्चा करेंगे जो बचत जरूरतों की प्राथमिकता तय करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते है।

हम सामान्य बचत जरूरतों की एक सूची तैयार कर उन्हें मौटे तौर पर किस प्रकार प्राथमिकता दी जाये से शुरूआत करते है।

चित्र 6.2

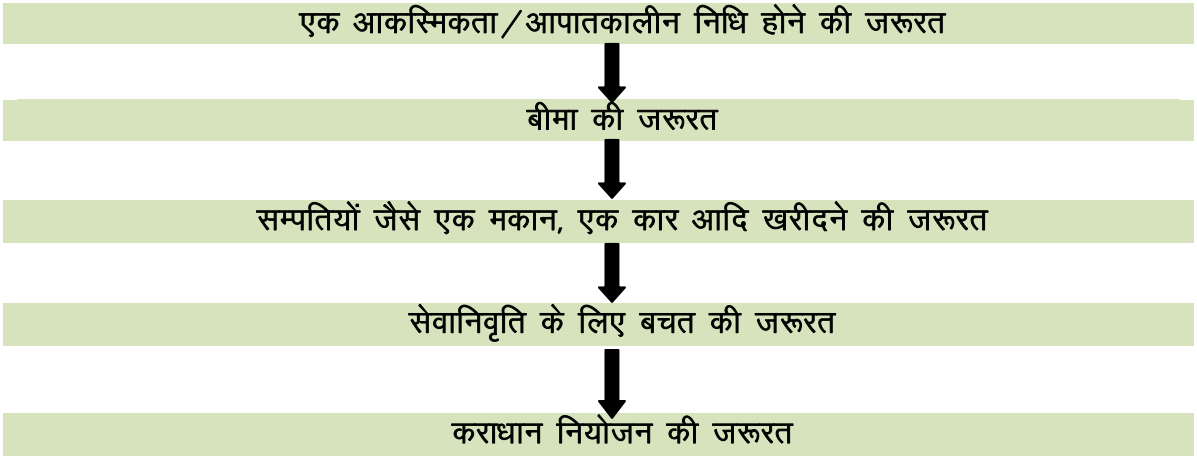

ल 1 आकस्मिकता / आपातकालीन निधि

किसी व्यक्ति की सर्वोपरि आवश्यकता एक आपातकालीन निधि की आसानी से उपलब्धता होती है। यह निधि विभिन्न प्रकार के प्रयोजनों/स्थितियों जैसे परिवार में बीमारी के कारण अप्रत्याशित मेडिकल खर्चों की पूर्ति, अस्थायी नौकरी खोना, आपातकालीन यात्रा, बच्चों की शिक्षण शुल्कों का भुगतान आदि के लिए आवश्यक हो सकते है। इस निधि में मोटे तौर पर राशि तीन से छः माह के खर्चों को कवर करने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए।

व्यक्तियों को आपातकालीन निधि को ऐसे बचत उत्पादों में निवेश करना चाहिए जिनमें सुगम तरलता (निवेश जिनके मूल्य में अधिक हानि के बिना आसानी से नकदी में परिवर्तित किये जा सकते हैं) उपलब्ध हो। इस मामले में बैंक जमा तथा ऋण आधारित म्यूच्अल फण्ड पसंदीदा उत्पाद है।

ल 2 बीमा

बीमा अप्रत्याशित परिस्थिति उत्पन्न होने पर व्यक्ति तथा उसके परिवार को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है। जिस प्रकार व्यक्तियों की बीमा जरूरतें अलग–अलग होती है, विभिन्न प्रकार के बीमा उत्पाद उपलब्ध हैं जो इन वित्तीय जरूरतों के लिए सुरक्षा प्रदान करते है। कुछ ऐसी जरूरतें, जिनके लिए व्यक्ति बीमा करा सकता है, निम्न प्रकार हैं:–

- आय प्रदाता की अप्रत्याशित मृत्यु की स्थिति में परिवार को कवर करने के लिए पर्याप्त निधि की जरूरत। किसी भी व्यक्ति के लिए यह जरूरत उच्च प्राथमिकता रखती है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सर्वाधिक पसंदीदा (पसंद किया जाने वाला) उत्पाद अवधि बीमा है। जब किसी व्यक्ति के पास पर्याप्त अवधि बीमा योजना हो तब अपनी बचत जरूरतों को पूरा करने के लिए बन्दोबस्ती योजनाओं, आजीवन योजनाओं, मनी बैक योजनाओं या यूलिप (ULIPs) जैसे बचत उत्पादों की और ध्यान दे सकते है।
- किसी परिवार की सम्पूर्ण मेडिकल आकस्मिकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा कवर होने की जरूरत होती है। लम्बे समय तक अस्पताल में भर्ती रहने तथा उपचार हेतु व्ययों को स्वयं व्यक्ति द्वारा वहन करना उसकी आर्थिक योजनाओं को अधोगति प्रदान कर सकता है। अतः इस जरूरत की महत्वपूर्ण प्राथमिकता मानी जाती है तथा पारिवारिक चल(फ्लोटर) स्वास्थ्य बीमा योजना इस जरूरत की पूर्ति कर सकती है।
- बच्चों की उच्च शिक्षा तथा विवाह के लिए पर्याप्त निधि (धन) की उपलब्धता की जरूरत। एक बाल बीमा योजना इस जरूरत को पूरा कर सकती है। पहले आय प्रदाता स्वयं के लिए पर्याप्त अवधि बीमा तथा पूरे परिवार के लिए स्वास्थ्य बीमा लेने के बाद इस जरूरत को प्राथमिकता दे सकता है। बाल बीमा योजनाएँ दो प्रकार की है। जोखिम को स्वयं वहन करने में अनिच्छुक निवेशक बाल बन्दोबस्ती योजनाओं का चयन कर सकते है, जबकि ऐसे निवेशक जो जोखिम प्रतिधारण करने के इच्छुक हैं बाल यूलिप (ULIPs) का चयन कर अपना धन एक उपयुक्त इक्विटी निधि में रख सकते हैं।
- सेवानिवृति के पश्चात् एक नियमित आय या एक एन्यूटी प्राप्त करने की जरूरत। बीमा कम्पनियाँ इस जरूरत की पूर्ति हेतु सेवानिवृति योजनाएँ प्रदान करती है। एक व्यक्ति एक मुश्त राशि निवेश कर सकता है या अपने कार्यशील जीवन के दौरान एक

सेवानिवृति योजना के लिए नियमित अंशदान कर सकते है। यह राशि बीमा कम्पनी द्वारा पॉलिसीधारकों की ओर से निवेशित की जाती है। प्रारम्भ में कोई व्यक्ति अपनी सेवानिवृति जरूरतों के लिए एक छोटी राशि से शुरूआत कर सकता है क्योंकि उसे उच्च प्राथमिकता वाली अन्य जरूरतों की पूर्ति करनी होती है। बाद में जैसे ही व्यक्ति की आय बढती है वह अपनी सेवानिवृति निधि के लिए निवेश बढा सकते है। फिर इस संचित निधि (सेवानिवृति निधि) का उपयोग किसी एन्यूटी योजना को खरीदने में किया जाता है। हमने अध्याय 5 में देखा है कि, बीमा कम्पनी एन्यूटी योजना की शर्तों के अनुसार (एन्यूटेन्ट को) चयनित अधिवार्षिकता आयु प्राप्त कर लेने के उपरान्त निर्धारित अवधि तक आवृत्तिक रूप से भुगतान करती है। हम एन्यूटीज के बारे में अधिक विस्तार से परिचर्चा अगले अध्याय में करेंगे।

ल 3 सम्पतियाँ

अपने जीवन काल के दौरान व्यक्ति को विभिन्न सम्पतियाँ खरीदने की जरूरत होती है; परन्तु, कुछ व्यक्तियों के पास एकल एकमुश्त भुगतान (डाऊन पेमेन्ट) करने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध नहीं होता है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए विभिन्न उत्पाद बाजार में उपलब्ध है जो कि इन सम्पतियों को खरीदने में व्यक्तियों की मदद कर सकते है। इन सम्पतियों में से कुछ के उदाहरण निम्न प्रकार हैः–

- एक मकान या सम्पति का क्रय।
- एक कार या द्विपहिया वाहन का क्रय।
- उपभोक्ता वस्तुओं जैसे रेफ्रिजरेटर , टेलीविजन, लेपटॉप आदि का क्रय।

एक मकान खरीदने की जरूरत व्यक्तियों की प्राथमिकता पर होती है, लेकिन इसमें लगने वाले विशाल निवेश को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति को विस्तृत योजना बनाने की जरूरत होती है। व्यक्ति को पहले अपने स्रोतों से सीमान्त राशि (मार्जिन मनी) भुगतान करने हेतु धन संचित करना होता है तथा शेष राशि किसी गृह ऋण के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। एक व्यक्ति को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गृह ऋण की मासिक किश्तों (EMIs) के लिए भुगतान की जाने वाली राशि उसकी अन्य जरूरतों जैसे बच्चों की शिक्षा, विवाह के लिए व्यय तथा उसकी सेवानिवृति निधि के लिए निवेश प्रभावित नहीं हो । ई एम आई (EMIs) तथा अन्य जरूरतों की पूर्ति के लिए आवंटित धन के मध्य एक संतुलन होना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए भी सावधानी बरतनी चाहिए कि ई एम आई (EMIs) मासिक सकल वेतन परिलब्धि के 40% से अधिक नहीं हो।

ध्यान रहे!

बैंक सम्पति मूल्य की सकल राशि ऋण के रूप में नहीं देता है। सम्पति के कुल मूल्य का केवल एक निश्चित प्रतिशत 75%या 80% तक बैंक द्वारा ऋण के रूप में दिया जा सकता है। शेष राशि का भुगतान व्यक्ति को करना होता हैं। यह राशि डाऊन पेमेन्ट या अन्तराल राशि या गृह स्वामी की इक्विटी राशि के रूप में जानी जाती है।

एक कार या एक द्विपहिया वाहन खरीदने की जरूरत को प्राथमिकता सूची में रखा जा सकता है। किसी व्यक्ति की प्रमुख आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु धन उपलब्ध हो जाने के बाद वह इन आवश्यकताओं को उच्च प्राथमिकता प्रदान करने पर विचार कर सकता है। उपभोक्ता वस्तुएँ नियमित मासिक आय के प्रवाह से खरीदी जा सकती है या व्यक्तिगत ऋण या क्रेडिट कार्ड के माध्यम से वित्त पोषित की जा सकती हैं।

ल 4 सेवानिवृति

अगली उच्च प्राथमिकता वाली जरूरत भविष्य के लिए निधि सुरक्षित करना है। व्यक्तियों को सुनिश्चित करना चाहिए कि जब वे सेवानिवृत हों तो उनके पास आय का एक नियमित एवं पर्याप्त स्त्रोत होना चाहिए। यह जरूरत उस जीवन स्तर पर निर्भर करती है जिसे कोई व्यक्ति अपनी सेवानिवृति के बाद जीवन की लागत के साथ बनाये रखने की जरूरत समझता है ताकि सेवानिवृत होने के बाद वे सुविधापूर्वक जीवन जी सके। हम पहले ही भाग ल 2 में देख चुके हैं कि इस जरूरत की कम आयु में बीमा कम्पनी एक सेवानिवृति या पेंशन योजना में निवेश से अंशतः पूर्ति की जा सकती है। सेवारत व्यक्तियों की सेवानिवृति जरुरतो की आंशिक पूर्ति उन सेवानिवृति लाभों से की जाती है जिसे उनका नियोक्ता सेवानिवृति पर प्रदान करता है जैसे गेच्यूटी, कर्मचारी भविष्य निधि अंशदान(EPF) तथा पेंशन, यदि लागू हो। स्वरोजगार करने वाले लोगों को कर्मचारियों को प्राप्त लाभों की सुविधा नहीं होती है क्योंकि कोई और नहीं उन्हें स्वयं अपने दायित्वों की पूर्ति करनी होती है।

सारांश में, कोई व्यक्ति सेवानिवृति आयु के बाद अपनी परिस्थितियों के अनुसार जरूरतों की पूर्ति लम्बी अवधि की सेवानिवृति योजना तथा म्यूच्अल फण्ड में निवेश करके उपयुक्त/वांछित कर्मचारी अनुलाभ प्राप्त कर सकता है।

ध्यान रहे!

गेच्यूटी एक कर्मचारी अनुलाभ है जो कर्मचारी द्वारा कम्पनी को दी गई सेवाओं के लिए कृतज्ञतास्वरुप नियोक्ता द्वारा कर्मचारी को भुगतान किया जाता है।

गेच्यूटी का पात्र होने के लिए कर्मचारी को पाँच वर्ष की अनवरत सेवा पूर्ण करना आवश्यक होता है। गेच्यूटी राशि की गणना कर्मचारी द्वारा की गई सेवा के वर्षों की संख्या के आधार पर की जाती है। नियोक्ता कर्मचारी की सेवा अवधि में उसकी ओर से ग्रेच्यूटी निधि में अंशदान करता रहता है तथा कर्मचारी द्वारा सेवा छोङने, उसकी सेवानिवृति अथवा मृत्यु होने पर ग्रेच्यूटी का भुगतान किया जाता है।

गेच्यूटी हेतु पात्रता, गणना, भुगतान तथा सम्बन्धित कराधान प्रावधानों को गेच्यूटी भुगतान अधिनियम 1972 के द्वारा परिभाषित किया गया है।

ल 5 कराधान योजना

हमने देखा है कि किसी व्यक्ति की विभिन्न जरूरतों में बीमा के लिए प्रावधान, बच्चों की शिक्षा, बच्चों के विवाह, मकान तथा सेवानिवृति के लिए निधि (धन)की जरूरत शामिल है। प्रत्येक व्यक्ति को सुनिश्चित करना चाहिए कि इन जरूरतों को पूरा करने के लिए ऐसे निवेश उत्पादों का चयन करें जो आय कर अधिनियम (इस अध्याय के भाग य 2 में परिचर्चा के अनुसार) की विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत अनुमत आयकर कटौती का अधिकतम लाभ प्राप्त करें।

ध्यान रहें!

किसी व्यक्ति का निवेश पोर्टफोलियों जितना संभव हो उतना कर बचत प्रदान करने में सक्षम होना

चाहिए, लेकिन किसी बचत या निवेश उत्पादों में कर अनुलाभ प्राथमिक लाभ के स्थान पर एक अतिरिक्त लाभ माना जाना चाहिए।

अतः खरीद (निवेश) का निर्णय जरूरत के आधार पर करना चाहिए न कि उत्पाद द्वारा प्रस्तावित कराधान लाभों के आधार पर।

प्रकरण–अध्ययन

राकेश मोहन एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर है जो विवाहित तथा दो वर्षीय बच्चे का पिता है। परिवार में वह अकेला आय प्रदाता है तथा उसकी पत्नी राधा एक गृहिणी है। उसने एक बीमा अभिकर्ता के माध्यम से जनवरी में एक यूलिप (ULIP) उत्पाद में निवेश किया है क्योंकि वह कर योग्य आय में से कटौती प्राप्त करके आय कर बचाना चाहता था। वह यूलिप (ULIP) के लिए रू. 25,000 वार्षिक भुगतान करता है।

इसके अलावा उसका कोई अन्य निवेश नहीं है। उसने इस वर्ष अपनी कम्पनी से अच्छा बोनस प्राप्त किया है तथा वह इस धन का उपयोग करके कुछ बचत उत्पादों की तलाश कर रहा है। वह अपने जीवन बीमा अभिकर्ता से यह सलाह लेने के लिए मिलता है कि उसे किस बचत उत्पाद में निवेश करना चाहिए। राकेश की आय तथा उसके वर्तमान निवेशों के बारे में चर्चा कर अभिकर्ता निम्नलिखित सूची तैयार करता है।

- यूलिप (ULIP) उत्पाद में निवेश एक अच्छा विकल्प है, इस उत्पाद को चयन करने के अन्य कारणों के अलावा इसमें कर लाभ भी है। परन्तु यूलिप (ULIP) में निवेशित वार्षिक राशि बहुत कम है अतः राकेश की भावी वित्तीय जरूरतों की पूर्ति हेतु इसे बढाने की जरूरत है। राकेश अपनी सेवानिवृति आयु के बाद के जीवन के लिए इस यूलिप (ULIP) में निवेश जारी रख सकता है।
- राकेश को कुछ राशि किसी जमा योजना में या किसी ऋण निधि योजना में निवेश कर एक आपातकालीन निधि सृजित करने की जरूरत है। अभिकर्ता सुझाव देता है कि राकेश रू. 1,00,000 के एक आपातकालीन निधि के रूप में अलग रखें।
- राकेश को अपनी भावी आय तथा दायित्वों की सुरक्षा के लिए अवधि बीमा कवर लेना चाहिए। उसे अपने परिवार के लिए भी एक स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी लेनी चाहिए।
- राकेश को अपने बच्चों की शिक्षा अथवा भविष्य में उत्पन्न होने वाली अन्य वित्तीय जरुरतों के लिए एक बाल बीमा योजना में निवेश करने पर विचार करना चाहिए।
- राकेश वर्तमान में एक किराये के अपार्टमेन्ट में रह रहा है इसलिए अभिकर्ता सुझाव देता है कि राकेश को एक मकान खरीदने का विचार करना चाहिए। इसके लिए राकेश को मकान की (मार्जिन मनी) अन्तराल राशि हेतु भुगतान धनराशि संचित करना शुरू करना चाहिए। शेष राशि गृह ऋण से भुगतान की जा सकती है। गृह ऋण के माध्यम से एक मकान खरीदने पर उसे मकान के साथ–साथ गृह ऋण के पुर्नभुगतान में मूल धन तथा देय ब्याज भुगतान दोनों पर कर छूट का लाभ प्राप्त होगा।

ल 6 अल्प , मध्यम, एवं दीर्घावधि जरूरतों के मध्य अन्तर

हमने भाग द 1 में देखा है कि किसी व्यक्ति को कोई आकस्मिक समस्या उत्पन्न होने पर उसे आवश्यक वित्त (धन) प्राप्त हो सके तथा उत्पन्न होने वाली जरूरतें जिनके लिये धन की आवश्यकता होती है को दीर्घावधि, मध्यम अवधि तथा अल्प अवधि में वर्गीकृत किया जा सकता है।

इन जरूरतों के अनुसार पूर्व में बताये उत्पादों की श्रृंखला से उपयुक्त निवेश उत्पाद का चयन करना चाहिए।

अल्प अवधि जरूरतें	निधि/धन की जरुरत 1–5 वर्ष की अवधि के लिए होगी। अल्प अवधि जरूरतों में आकस्मिकताओं के लिए बचत आदि शामिल है।
मध्यम अवधि जरूरतें	निधि/धन की जरुरत 5–15 वर्ष की अवधि में होगी। इन जरूरतों में बच्चों की शिक्षा, विवाह आदि के लिए बचत शामिल है।
दीर्घावधि जरूरतें	निधि/धन की जरुरत 15 वर्ष से अधिक समय पश्चात होगी। दीर्घावधि जरूरतों में सेवानिवृति योजना शामिल है।

संस्तुत क्रिया

अपने परिवार के लिए अल्प अवधि, मध्यम अवधि, तथा दीर्घ–अवधि जरूरतों की सूची तैयार करें। जब सूची तैयार हो जाये तो उनकी प्राथमिकता तय करों। जरूरतें जो सर्वोपरि लगें उन्हें सूची में सर्वोच्च स्थान पर रखना चाहिए।

सारांश

अब आप अपने ग्राहक की व्यक्तिगत जरुरतों की पहचान करने में सक्षम हो गऐ हैं कि उनकी पूर्ति जीवन बीमा तथा बचत उत्पादों में से किससे अधिक प्रभावी ढंग से की जा सकती हैं तथा यह कि उनमें से चयनित उपयुक्त उत्पादों का उपयोग कैसे किया जाये, के बारे में समझ चुके है।

इससे पहले कि हम विचार करें कि अध्याय 8 तथा 9 में वर्णन की जाने वाली व्यवसायिक वित्तीय प्रक्रिया में क्या क्या सम्मिलित है, समझने के लिए हम अगले अध्याय में कुछ अन्य वित्तीय उत्पादों की चर्चा करेंगे।

मुख्य बिन्दु

इस अध्याय में चर्चित मुख्य विचारों को सारांश रूप से निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :–

बचत/निवेश सलाह की जरुरत

- व्यवसायिक सलाहकार वित्तीय नियोजन प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्तियों को उनकी भावी वित्तीय जरुरतें पहचानने में मदद कर सकते हैं।
- वित्तीय नियोजक व्यक्तियों को एक निवेश पोर्ट फोलियो सृजित करने में मदद कर सकते है जिससे न्यूनतम जोखिम के साथ अधिकतम प्रतिफल प्राप्त हो। वित्तीय नियोजक व्यक्ति की वित्तीय जरुरतों के अनुसार उत्पादों का चयन कर सकते है।

किसी ग्राहक की बचत जरुरतों को निर्धारित करने वाले कारक

- जिन लोगों के पास धन (वित्त) नहीं होता है उन्हें व्यापक वित्तीय नियोजन करने की आवश्यकता होती है।
- सामान्य बचत जरुरतों में शामिल है :–
  - एक आपातकालीन निधि सृजित करना;
  - बच्चों की शिक्षा के लिए नियोजन एवं निवेश करना;
  - बच्चों के विवाह के लिए नियोजन एवं निवेश करना;
  - एक मकान खरीदना;
  - अन्य लक्ष्यों जैसे एक कार खरीदना, वार्षिक अवकाश आदि के लिए नियोजन एवं निवेश करना;
  - सेवानिवृति के लिए नियोजन एवं निवेश करना।
- जिन लोगों के पास पूँजी होती हैं उनकी जरुरतें वर्तमान पूँजी में वृद्धि करना, बच्चों के लिए उत्तराधिकार पूँजी छोड़ना, सेवानिवृति के बाद सुखी जीवन जीने में समर्थ होना आदि।

बचत उत्पादों की विशेषताएँ एवं लाभ

- कुछ बचत उत्पाद आय वृद्धि (नियमित आय), कुछ पूँजी वृद्धि तथा कुछ अन्य दोनों का मिश्रण प्रदान करते है।
- कुछ उत्पादन गारंटीड प्रतिफल के रुप में उपलब्ध होते है, कुछ परिवर्तनशील प्रतिफल प्रदान करते है तथा कुछ अन्य दोनों का एक मिश्रण प्रदान करते है।
- निम्न जोखिम उत्पाद उच्च जोखिम उत्पादों की तुलना में कम प्रतिफल प्रदान करते है। अतः व्यक्ति की जोखिम वहन क्षमता के आधार पर सावधानीपूर्वक उत्पादों का चयन करना चाहिए।

विभिन्न प्रकार के बचत उत्पाद

- अनेक जीवन बीमा उत्पादों में बचत घटक विद्यमान रहता हैं। प्रीमियम के बचत घटक को पॉलिसीधारक की ओर से बीमा कम्पनी द्वारा निवेश किया जाता है तथा अर्जित प्रतिफल को पॉलिसीधारकों में बोनस के रूप में वितरित किया जाता है।
- बैंक जमा ऐसे उत्पाद होते हैं जिनमें किसी व्यक्ति को जमा करवाते समय एक निर्धारित अवधि के लिए एक स्थिर ब्याज दर पर एक मुश्त राशि का निवेश करना होता है।
- म्यूच्अल फण्ड ऐसी योजनाऐं है जिनका प्रबन्धन सम्पति प्रबन्धन कम्पनियों (AMCs) द्वारा किया जाता है।
- म्यूच्अल फण्ड ऐसी योजनाऐं हैं जो एक समान हित वाले लोगों को एक समूह के रूप में

एक साथ लाते हैं। इन लोगों से एकत्रित किये गये अंशदान(धन) को उनकी ओर से निवेश किया जाता है तथा अर्जित प्रतिफल को उन्ही में वितरित कर दिया जाता है।
• इक्विटी शेयरधारक सम्बन्धित कम्पनी का स्वामित्व प्राप्त करता है। इक्विटी शेयर डिवीडेन्ट के रूप में आय, बोनस शेयर एक कम्पनी के स्वामित्व को दर्शाते है। इक्विटी शेयर लाभांश आय, बोनस शेयर तथा पूँजी संवर्धन(वृद्धि) प्रदान करते है।
• भारत में शेयरों का क्रय–विक्रय दो स्टॉक एक्सचेंजों – द बोम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बी.एस.ई.) तथा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएस.ई.) के दलाली घरों के माध्यम से होता है।
• बॉण्ड ऋण पत्र होते हैं जिन्हे जनता से धन प्राप्त करने के लिए कम्पनियों, सरकारों तथा अन्य संस्थानों द्वारा जारी किया जाता है।
• गोल्ड इ. टी. एफ. (एक्सचेंज ट्रेडेड फण्ड्स) म्यूच्अल फण्ड के समान होते है जिनमें गोल्ड इकाईयों का शेयरों के समान स्टॉक एक्सचेंज में इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में कारोबार किया जाता है। गोल्ड इ. टी. एफ. में एक यूनिट एक ग्राम प्रदर्शित करता है।
बचत उत्पादों पर कर एवं मुद्रास्फीति का प्रभाव
• विभिन्न बचत उत्पादों में निवेश करके निवेशक प्रचलित (लागू)आय कर अधिनियम की विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत अनुमत विभिन्न कर कटौतियों का लाभ उठा सकते है।
बचत उत्पादों पर ब्याज दरों का प्रभाव
• ऋण की मांग में कमी करने तथा लोगों को बचत में वृद्धि करने के लिए ब्याज दर बढाई जाती है।
• ऋण की मांग बढाने, उपभोक्ताओं को अधिक व्यय हेतु प्रोत्साहित करने एवं वस्तुओं तथा सेवाओं की मांग में वृद्धि करने हेतु ब्याज दर घटाई जाती है।
बचत जरुरतों की प्राथमिकताएँ निर्धारित करना
• मोटे तौर पर बचत आवश्यकताओं की प्राथमिकता निम्न प्रकार से निर्धारित की जा सकती है :– – एक आकस्मिक/आपातकालीन निधि का सृजन; – बीमा के लिए; – एक मकान, कार आदि के समान सम्पति खरीदने के लिए; – सेवानिवृति के बाद के जीवन हेतु बचत के लिए – कर नियोजन।
• जरुरतें अल्प , मध्यम एवं दीर्घावधि के रूप में वर्गीकृत की जा सकती है।

प्रश्न–उत्तर

6.1

म्यूच्यल फण्ड एक ऐसी निधि है जो समान उद्देश्य वाले लोगों को आपस में जोड़ता है। इन लोगों से एकत्रित धन उनकी ओर से निवेश किया जाता है तथा प्रतिफल पुनः उनके मध्य वितरित किया जाता है। ए एम सी ज में योग्य एवं अनुभवी निधि प्रबन्धक (जिन्हें पोर्टफोलियो प्रबन्धक भी कहा जाता है) होते है जो उस निधि (या योजना) आधारित निधि में निवेश करने के लिए उत्तरदायी होते है जिन्हें एक निवेशक द्वारा चयन किया जाता है।

म्यूच्अल फण्ड में निवेश करने का मुख्य लाभ जोखिम विविधिकरण होता है। व्यक्ति के निवेश को विभिन्न प्रतिभूतियों में विस्तारित कर जोखिम स्तर न्यूनतम रखते हुए अधिकतम प्रतिफल सुनिश्चित करना ।

म्यूच्अल फण्ड दो प्रकार से आय प्रदान करते हैः–

- समय समय पर म्यूच्अल फण्ड योजना द्वारा घोषित लाभांशों (डिवीडेन्ड)के रूप में नियमित आय ; तथा
- पूँजी वृद्धि ; जहाँ म्यूच्अल फण्ड इकाईयों को खरीदे गये मूल्य से अधिक मूल्य पर बेचा जाता है।

6.2

निम्न में से कोई पाँचः–

- परम्परागत जीवन बीमा उत्पादों के लिए भुगतान किया गया प्रिमियम।
- पेंशन योजनाएँ।
- यूनिट लिंक्ड बीमा योजनाएँ (ULIPs)।
- गृह ऋण के मूलधन घटक का पुर्नभुगतान।
- कर्मचारी भविष्य निधि (EPFs)।
- लोक भविष्य निधि (PPFs)।
- राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र (NSCs)।
- पाँच वर्षीय कर बचत बैंक जमा योजनाऐं।
- वरिष्ठ नागरिक बचत योजनाएँ (SCSs)।
- इक्विटी लिंक्ड बचत योजनाएँ (ELSs)।

6.3

ब्याज दरों में कमी होने पर, ऋण सस्ते हो जाते है तथा कम्पनियों द्वारा किये गये निवेश में वृद्धि होती है। ऐसा अर्थव्यवस्था को उत्प्रेरित तथा प्रोत्साहित करने के लिए, किया जाता है ताकि निवेश बढें तथा वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग में वृद्धि के रूप में अर्थव्यवस्था का विकास हो।ब्याज दरों में कमी के निम्नांकित प्रभाव हैः–

- कम ब्याज दरें उत्पाद हेतु ऋण लेने की मांग बढाती है। निवेशक वित्तीय (आर्थिक) सम्पतियाँ क्रय करने हेतु ऋण लेते है परिणामस्वरूप उपभोग में वृद्धि होती है।
- निम्न ब्याज दरों के कारण बैंक जमा तथा ऐसी ही अन्य योजनाओं की तुलना में इक्वीटीज और गृह सम्पदा (रियल स्टेट) में निवेश को प्राथमिकता दी जाती है।
- ऐसे निवेशक जो बॉण्ड्स एवं बैंक जमा योजनाओं में उच्च ब्याज दरों पर पहले ही निवेश कर चुके है, ब्याज दरों के गिरने पर लाभप्रद स्थिति में होते है।

स्व–परीक्षण प्रश्न

1. सोने तथा चाँदी में निवेश करने के मुख्य कारण क्या है ?

2. आयकर अधिनियम की कौनसी धारा के अन्तर्गत, कोई व्यक्ति किसी स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी के लिए भुगतान किये गये प्रीमियम पर कर योग्य आय में से छूट प्राप्त कर सकता है ?

(अ) धारा 80 C
(ब) धारा 80 D
(स) धारा 80 E
(द) धारा 80 F

3. निम्न में कौनसी बैंक जमा योजनाओं में बैंक व्यक्ति को अवधि के अन्त में मूलधन एवं ब्याज का भुगतान करता है ?

(अ) बचत जमा योजना
(ब) परम्परागत जमा योजना
(स) संचयी जमा योजना
(द) उपरोक्त में से कोई नहीं

आप अगले पृष्ठ पर उत्तर पायेगें।

स्व–परीक्षण उत्तर

1.

सोने तथा चाँदी में निवेश करने के मुख्य कारणों में शामिल है :–

- उच्च प्रतिफल;
- पोर्टफोलियो विविधिकरण;
- मुद्रास्फीति से बचाव (सुरक्षा); तथा
- अनिश्चितताओं के विरुद्ध बीमा।

2.

(ब) धारा 80 D

इस धारा के अन्तर्गत एक व्यक्ति द्वारा अपनी, अपने पति या पत्नी तथा अपने बच्चों हेतु मेडिकल बीमा के लिए भुगतान किया गया प्रीमियम कर योग्य आय में से कटौती योग्य होता है।

3.

(स) संचयी जमा योजनाऐं